विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. ३०/-
आजीवन शुल्क रु. ५००/-

बुद्धवर्ष 2561, फाल्गुन पूर्णिमा 1 मार्च, 2018, वर्ष 47, अंक 9

For online Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

चरन्ति बाला दुम्मेधा, अमित्तेनेव अत्तना।
करोन्ता पापकं कम्मं, यं होति कटुकप्फलं॥
धम्मपदपालि- ६६, बालवग्गो

बाल-बुद्धि वाले मूर्ख जन अपने ही शत्रु बन कर आचरण करते हैं और ऐसे पापकर्म करते हैं जिनका फल (स्वयं उनके अपने लिए ही) कड़ुवा होता है।

क्या है बुद्ध-शिक्षा

पहला व्याख्यान, भाग-1. (23 सितंबर, 1951)

— थ्रे सिदु सयाजी ऊ बा खिन

(रंगून के पगोडा रोड स्थित मेथोडिस्ट गिरजाघर में धर्म जिज्ञासुओं की एक सभा में बर्मा सरकार के महालेखापाल (अकाउंटेंट जनरल) कम्मट्ठानाचार्य थ्रे सिदु ऊ बा खिन ने तीन व्याख्यान दिये, जिन्हें यहां क्रमशः प्रकाशित कर रहे हैं।)

— (अनु.: स. ना. गोयन्का)

सज्जनो और सन्नारियो!

आज आप लोगों के सम्मुख ''क्या है बुद्ध-शिक्षा'' विषय पर अपनी बात आपके सम्मुख रखने का अवसर पाकर मैं अपने आपको धन्य मानता हूं। अपनी बात आरंभ करने के पूर्व मैं एक बात साफ-साफ बता देना चाहता हूं और वह यह कि मैंने विश्व-विद्यालय की उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की है तथा आधुनिक विज्ञान का भी मुझे उतना ही ज्ञान है जितना कि एक साधारण व्यक्ति को हो सकता है। मैं, न तो बुद्ध-शिक्षा के दार्शनिक सिद्धांतों का पंडित हूं और न ही मुझे पालि भाषा का अधिक ज्ञान है जिसमें कि बुद्ध-शिक्षा के त्रिपिटक ग्रंथ संगृहीत है। हां, कतिपय प्रतिष्ठित विद्वान भिक्षुओं द्वारा बर्मी भाषा में बुद्ध-शिक्षा पर लिखी गई कुछ एक टीकाएं मैंने अवश्य पढ़ी है। मैंने बुद्ध-शिक्षा का अध्ययन सैद्धांतिक दृष्टिकोण से कम, परंतु व्यावहारिक दृष्टिकोण से अधिक किया है। इसीलिए मुझे विश्वास है कि आज मैं जो जानकारी देने जा रहा हूं वह आपको सरलता से अन्यत्र शायद ही प्राप्त हो।

मैं यह भी स्वीकार कर लेना चाहता हूं कि मैं अभी इस विषय का एक विद्यार्थी ही हूं और बुद्ध-शिक्षा के विभिन्न प्रयोगों द्वारा प्रकृति के स्वभाव की सत्यता का अन्वेषण मात्र कर रहा हूं। गृहस्थ होने के अतिरिक्त एक उच्च सरकारी अधिकारी होने के कारण मुझे इस कार्य के लिए बहुत कम अवकाश मिलता है और इसी अल्प समय में मैं अपने प्रयोग करता रहता हूं। यही कारण है कि मेरी प्रगति बहुत धीमी है और इसीलिए मैं यह दावा भी नहीं करता कि मैं जो कुछ कहने जा रहा हूं वह संपूर्णतया सत्य ही है। हो सकता है कि वह सही भी हो अथवा गलत भी। परंतु, हां, मैं आपको इतना विश्वास अवश्य दिला सकता हूं कि मैं जो कुछ भी कहूंगा वह अपनी ओर से पूरी सच्चाई, सद्भावना और गहरे विश्वास से कहूंगा।

भगवान बुद्ध ने ''कालाम सुत्त'' में कहा है:--

''तुम किसी बात को केवल इसलिए मत स्वीकार करो कि यह बात अनुश्रुत है, केवल इसलिए मत स्वीकार करो कि यह परंपरागत और पीढ़ियों से मानी गयी है, केवल इसलिए मत स्वीकार करो, कि यह बहुतों द्वारा इसी प्रकार कही गयी है, केवल इसलिए मत स्वीकार करो कि इस बात के प्रमाण में कोई ऋषि-प्रणीत शास्त्र प्रस्तुत किया गया है, केवल इसलिए मत स्वीकार करो कि यह बात हमारे मत और स्वभाव के अनुकूल है, केवल इसलिए मत स्वीकार करो कि कहने वाला हमारा गुरु है, पूज्य है। जब तुम अपने अनुभव से स्वयं जान लो और परख लो कि यह बात तर्क सम्मत है और साथ ही सर्वलोकहितकारिणी भी है तो ही उसे स्वीकार करो, और उसके अनुसार जीवन जीओ।''

इसलिए मैं आपसे निवेदन करता हूं कि जब मैं दार्शनिक सिद्धांतों का व्याख्यान करूं तो कृपया उन्हें तब तक न मानें जब तक कि आपको पूर्ण विश्वास न हो जाय कि वे तर्क-सम्मत हैं और व्यावहारिक भी हैं।

सब्ब पापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्त परियोदपनं, एतं बुद्धानसासनं।।

— सभी पापों को न करना, कुशल (पुण्य) कार्यों का संपादन करना और चित्त को निर्मल करना, यही समस्त बुद्धों की शिक्षा है।

धम्मपद का यह श्लोक, संक्षेप में, बुद्ध-शिक्षा का सार है। सुनने में यह जितना सरल लगता है, व्यवहार में उतना ही कठिन है। बुद्ध-सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाये बिना कोई सच्चा प्रशिक्षु हो ही नहीं सकता। भगवान बुद्ध ने कहा है—

''जिस परम सत्य का मैंने स्वयं साक्षात्कार किया है उसे ही तुम्हें बताया है। इसे अपनाओ, धारण करो, ध्यान भावना करो, इसे प्रसारित करो, जिससे कि यह सद्धर्म देव-मनुष्यों के हित-सुख के लिए चिरकाल तक स्थायी हो।''

इससे पहले कि मैं भगवान बुद्ध की शिक्षाओं पर बोलूं— उन शिक्षाओं पर जो कि बुद्ध-शिक्षा की आधारशिलाएं हैं, मैं आपको भगवान बुद्ध की जीवन-कथा से परिचित करा देना चाहता हूं और उसके लिए आवश्यक है कि मैं आपको पहले बुद्ध मान्यताओं की उस पृष्ठभूमि की थोड़ी बहुत जानकारी करा दूं जो कि आप में से बहुतों के लिए सर्वथा नई और अनजानी होगी। मैं आपको विश्व, ब्रह्मांड, विभिन्न लोक, भुवन और प्राणी-जगत के संबंध में बुद्ध-मान्यताओं का संक्षिप्त परिचय करा देना चाहता हूं। इस परिचय में आपको प्रभूत चिंतन सामग्री मिलेगी। परंतु मैं आपसे प्रार्थना करूंगा कि आप इसे पहले शांतिपूर्वक सुन लें और प्रवचन की समाप्ति पर प्रश्नोत्तर और विचार-विमर्श के समय तक धैर्य रखें।

विश्व के संबंध में बुद्ध-मान्यता इस प्रकार है—

प्रथम 'ओकास लोक' (अवकाश लोक) है, जिस पर कि समस्त नाम और रूप— चेतन और जड़ आश्रित हैं। यह ऐसा लोक है, जिसमें कि नाम और रूप की ही प्रधानता है, जो कि कार्य-कारण के क्रमिक नियमों से बँधे हुए हैं। इसके बाद है 'संस्कार-लोक' (चित्तवृत्तियों— चेतनाओं का लोक)— मन द्वारा सृजनशील और सृजित। कायिक, वाचिक और मानसिक कर्मों के सहारे, मन की सृजनात्मक शक्तियों द्वारा, इस मनोलोक का सृजन होता है। तीसरा और अंतिम है 'सत्तलोक' जो कि मानसिक शक्तियों और तज्जनित कर्मों द्वारा उत्पन्न दृश्य व अदृश्य सत्वों का, प्राणियों का, निवास

लोक है। ये तीनों लोक एक दूसरे से अविच्छेद्य हैं, मानो एक ही में तीनों समाये हुए हैं। तीनों एक दूसरे से घुल-मिल कर मानो एक हो रहे हैं।

एक और बात जो आपको बहुत रुचिकर प्रतीत होगी, वह है— 'चक्रवाल' (ब्रह्मांड का निकाय अर्थात ब्रह्मांड की परिधि) की व्याख्या। प्रत्येक चक्रवाल में 31 भुवन हैं। प्रत्येक चक्रवाल का अपना मानव जगत है, अपना सौरमंडल है तथा अपने विभिन्न प्राणी-जगत हैं। इन चक्रवालों की संख्या अगण्य हैं, ये अनंत हैं। इनमें से हमारे आसपास दस हजार चक्रवाल तो ऐसे हैं जो कि बुद्ध के 'ज्ञाति क्षेत्र' माने जाते हैं। (यानी, बुद्ध यहीं प्रकट होते हैं।) जब भगवान गौतम बुद्ध ने कपिलवस्तु के पास महावन में लोक प्रसिद्ध महासमय सुत्त की देशना की थी तब केवल हमारे ही चक्रवाल के नहीं, प्रत्युत इन सभी दस हजार चक्रवालों के देव-ब्रह्मा धर्म श्रवण हेतु एकत्र हुए थे। इनके अतिरिक्त शत सहस्र कोटि चक्रवालों का एक ऐसा समूह है जहां के प्राणी बुद्ध की अनंत करुणा और मैत्री द्वारा प्रभावित होते हैं और इसीलिए उस समूह को उनका **''आणाखेत्त''** (आज्ञा क्षेत्र) अर्थात प्रभाव क्षेत्र कहते हैं। और बाकी के असंख्य चक्रवाल ऐसे हैं जो कि बुद्ध के आवरणरहित, अप्रतिहत ज्ञान के विषय हैं और तभी यह समूह उनका 'विषय क्षेत्र' कहलाता है। यह क्षेत्र बुद्ध के प्रभाव क्षेत्र के बाहर है, इसलिए बुद्ध की चित्तवृत्तियों से लाभान्वित नहीं हो सकता। इससे आप समझ सकते हैं कि बुद्ध मान्यता में अखिल विश्व की कितनी विशद व्याख्या है। इस अनंत असीम अवकाश लोक में हमारा यह संसार कितना क्षुद्र है, मानो निस्सीम आसमान में भटकता हुआ एक छोटा-सा रजकण।

आओ! अब मैं आपको हमारे इस चक्रवाल के तीन लोक और 31 भुवनों से परिचय कराऊं। ऐसे ही लोक और भुवन प्रत्येक चक्रवाल में हैं।

(अ) अरूप लोक— मनोमय ब्रह्मलोक

(आ) रूप लोक— सूक्ष्म पार्थिव ब्रह्मलोक

(इ) काम लोक— देव, मनुष्य और निम्नतर श्रेणी के प्राणियों का इंद्रिय लोक या वासना लोक।

(अ) **अरूप लोक**: इसमें चार ब्रह्मभुवन हैं। ये भुवन जड़ भौतिक पदार्थों से नहीं, बल्कि ये केवल नाम यानी, चित्त से बने हैं।

(आ) **रूप लोक**: इसमें 16 ब्रह्मभुवन हैं। ये अत्यंत सूक्ष्म रूप यानी भौतिक पदार्थों से बने हैं।

(इ) **काम लोक**: इसमें हैं:—

(क) **छः देव भुवन**— 1. चतुर्महाराजिक, 2. तावतिंस (त्रयतिंस), 3. याम, 4. तुसित, 5. निर्माण रति, 6. परिनिर्मित वसवर्ती।

(ख) **मानव भुवन**

(ग) **चार अधो भुवन** (अपाय भूमियां)--

(1) निरय (नर्क), (2) तिरच्छन-तिर्यक (पशु-पक्षी आदि)

(3) प्रेत प्राणी, (4) असुर

कायिक, वाचिक और मानसिक कर्मों की कार्य-शृंखला में जिस समय जैसी चेतना होती है, मन उस समय वैसी ही चित्तवृत्तियों का प्रजनन करता है और उन्हीं के अनुरूप ये लोक शुद्ध-अशुद्ध, शीतल-उत्तप्त, प्रकाशमय-अंधकारमय, सुखमय-दुःखमय और लघिमामय-गरिमामय होते हैं। उदाहरणस्वरूप हम एक अत्यंत संपन्न धार्मिक व्यक्ति को लें। वह अपनी अपरिमित मैत्री और करुणा से समस्त प्राणी जगत को आप्लावित कर देता है। यों करते हुए वह ऐसी चित्तवृत्तियों का प्रजनन करता है जो कि शुद्ध हैं, शीतल हैं, प्रकाशमयी हैं, लघिमामयी हैं और सुखमयी हैं। ये सौमनस्यपूर्ण चित्तवृत्तियां ब्रह्मलोकगामिनी हैं। दूसरी ओर एक सर्वथा विपरीत गुण-धर्म वाले व्यक्ति को लें, जो कि असंतुष्ट है और क्रुद्ध है। उसका चेहरा देखते ही ज्ञात हो जायगा कि उसके मन पर कितनी अशुद्धि, तपन, अंधकार, भारीपन और दुःख छाया हुआ है। इसका कारण यही है कि उसने ऐसी दौर्मनस्यपूर्ण द्वेषजन्य चित्तवृत्तियों को उत्पन्न किया है जो कि अधोलोकगामिनी हैं। द्वेष की ही भांति लोभ और मोहजन्य चित्तवृत्तियों की भी यही अधोगति है।

भविष्य के सुखमय जीवन की कामना से अनुप्रेरित, दान, भक्ति, सदाचार आदि सुकर्म ऐसी चित्तशक्तियों का प्रजनन करते हैं जो कि देव-मनुष्यों के वासना लोक की ओर ले जाने वाली होती हैं।

सज्जनो और सन्नारियो! बुद्ध मान्यताओं के इस परिवेश में बुद्ध जीवन को समझना आपके लिए सरल होगा। संक्षेप में भगवान की जीवन-कथा इस प्रकार है—

निदान कथा (बुद्धत्व प्राप्ति के लिए पूर्व प्रयत्न)

जिस कल्प में पांच सम्यक संबुद्ध प्रकट होने निश्चित होते हैं उसे भद्र कल्प कहते हैं। वर्तमान कल्प भद्र कल्प है जिसमें कि भगवान गौतम चौथे बुद्ध हुए हैं। इनके पूर्व भगवान ककुसंध, कोणागमन और काश्यप बुद्ध हो चुके हैं। इस कल्प के पूर्व अगणित कल्पों में असंख्य बुद्धों का प्रादुर्भाव हो चुका है। सभी बुद्धों ने एक ही धर्म का उपदेश दिया है— वह धर्म जो सभी अधिकारी प्राणियों को दुःख और मृत्यु से उबारता है। सभी बुद्ध महाकारुणिक, महातेजस्वी और सर्वज्ञ होते हैं।

अनेक कल्पों पूर्व, एक बार जब धरती पर भगवान दीपंकर बुद्ध हुए तब उनके दर्शनों से सुमेध नाम का एक तापस इतना प्रभावित और समुत्साहित हुआ कि उसने तत्क्षण इस बात का प्रण कर लिया कि वह भी भविष्य में सम्यक संबोधि प्राप्त करेगा और इसके निमित्त जो भी कठिन तप-साधनाएं करनी होंगी करेगा, कष्ट झेलने होंगे झेलेगा। दीपंकर बुद्ध ने तापस सुमेध का यह शुभ संकल्प जान कर उसका अनुमोदन किया और यह भविष्यवाणी की कि चार असंख्य और एक लाख कल्पों के पश्चात यही तापस 'गौतम' नामक सम्यक संबुद्ध बनेगा। इसके बाद वह बोधिसत्त्व (भावी बुद्ध) अनेक जन्म-जन्मांतरों में दस बुद्ध-करणीय पारमिताओं (सद्गुणों की परिपूर्णताओं) का अभ्यास करता रहा और उच्चतम चित्तवृत्तियों का संग्रह संचय करता रहा।

दस पारमिताएं हैं:--

(1) दान पारमी, (2) शील पारमी, (3) निष्क्रमण पारमी, (4) प्रज्ञा पारमी, (5) वीर्य पारमी, (6) क्षांति पारमी, (7) सत्य पारमी, (8) अधिष्ठान पारमी, (9) मैत्री पारमी, और (10) उपेक्षा पारमी

इस प्रकार हम देखते हैं कि संबोधि की उपलब्धि अत्यंत कष्टसाध्य है। इसकी उपलब्धि का चिंतन मात्र भी असीम मानसिक शक्तियों की अपेक्षा करता है।

बोधिसत्त्व ने असंख्य जन्म-जन्मांतरों में उपार्जित पारमिताओं की परिपूर्णता उस जन्म में पूरी की जबकि वह दानवीर महाराज वैसांतर के रूप में जन्मा। इस जन्म में उसका दान अद्वितीय था। उसने राज-पाट, धन-संपदा, ऐश्वर्य-प्रभुता, यहां तक कि अपने स्त्री-पुत्रों को भी दान में दे दिया। इस प्रकार उसने भगवान दीपंकर बुद्ध के सम्मुख लिये गये प्रणों की पूर्ति की। इसके बाद बोधिसत्त्व ने सेतकेतु नामक प्रतापी देवता के रूप में तुषित देवलोक में जन्म धारण किया और उस स्वर्गलोक में, उस समय की प्रतीक्षा करता रहा जबकि उसे बुद्धत्त्व प्राप्त करने के लिए अंतिम जन्म ग्रहण करना था। समय आने पर तुषित देवलोक को त्याग कर वह कपिलवस्तु के महाराज शुद्धोदन की रानी महामाया के गर्भ में स्थित हुआ। जब प्रसव काल समीप आने लगा तो रानी ने प्रसूति के लिए पीहर जाने की इच्छा प्रकट की। महाराज शुद्धोदन ने उसकी इच्छा पूर्ति के लिए आवश्यक दास-दासियों और रक्षकों के साथ रानी को पितृगृह की ओर रवाना कर दिया। काफिला लुंबिनी के शाल वन में से गुजर रहा था। सारा वन शाल पुष्पों के सौरभ से सुवासित था। कुछ देर के लिए काफिला वहां रुका। रानी महामाया की इच्छा हुई कि थोड़ी देर वन की सैर करे। वह अपनी पालकी पर से उतर गयी। शाल वन की रमणीयता का आनंद लेती हुई वह एक शाल वृक्ष के नीचे खड़ी हुई और फूल तोड़ने की इच्छा से जैसे ही उसने अपने दाहिने हाथ से वृक्ष की डाल पकड़ी वैसे ही अत्यंत अप्रत्याशित रूप से एक बालक को जन्म दे दिया जो कि भावी सम्यक

संबुद्ध बनने वाला था। इस बालक के जन्म लेते ही विश्व में 32 प्रकार की चमत्कारपूर्ण अप्राकृत घटनाएं घटीं। समस्त भौतिक संसार प्रकंपित हो उठा। सौरमंडल अभूतपूर्व प्रकाश से देदीप्यमान हो उठा। पार्थिव जगत के सारे प्राणी एक दूसरे को देखने में समर्थ हुए। गूंगों और बहरों ने बोलने की और सुनने की शक्तियां प्राप्त कीं। सर्वत्र देव दुंदुभि के शब्द सुन पड़े। आदि-2।

इस अवसर पर महाराज शुद्धोदन का संन्यासी राजगुरु काल देवल तावतिंस देवलोक में गया हुआ था और वहां के देवताओं को उपदेश दे रहा था। काल देवल ने ध्यान की आठ समापत्तियों पर अधिकार प्राप्त करके बहुत-सी सिद्धियां उपलब्ध कर रखी थी। जब उसने दिव्य दृष्टि द्वारा यह देखा कि समस्त नाम और रूप लोकों में एकाएक जो आनंद और उत्साह छा गया है वह महाराज शुद्धोदन के पुत्र-जन्म के कारण है तो वह तत्काल देवलोक छोड़ कर शुद्धोदन के राजमहलों में पहुँचा और उसने बालक को आशीर्वाद देने के लिए बुलवाया। महाराज ने जैसे ही नवजात शिशु को राजगुरु के चरणों पर रखना चाहा वैसे ही एक चमत्कारपूर्ण घटना घटी। बालक हवा में उठा और उसने राजगुरु के मस्तक पर अपने नन्हें-नन्हें चरण-धर दिये। राजगुरु देवल तुरंत जान गया कि यह बालक बोधिसत्त्व ही है। यह जान कर वह अत्यंत प्रसन्न हुआ; परंतु दूसरे क्षण जब उसने यह जाना कि उसकी अपनी आयु थोड़ी ही शेष रह गयी है तो वह दु:ख से रो पड़ा। वह इस जानकारी मात्र से व्यथित हो उठा कि वह सम्यक संबुद्ध के दर्शन न कर सकेगा और न ही उनके उपदेश सुन सकेगा, क्योंकि मृत्यु के पश्चात वह स्वयं अरूप ब्रह्मलोक में जन्म लेगा; जहां रहते हुए इस भौतिक जगत से संपर्क स्थापित करना असंभव होगा।

पांचवें दिन बालक का नामकरण संस्कार किया गया और उसे 'सिद्धार्थ' नाम दिया गया। इस अवसर पर जो ज्योतिषी और पंडित एकत्रित हुए उन्होंने बताया कि बालक में बुद्धत्व के सारे लक्षण विद्यमान हैं। सातवें दिन माता महामाया का निधन हो गया और नन्हें राजकुमार के लालन-पालन का दायित्व मौसी प्रजापति गौतमी ने संभाला।

राजकुमार सिद्धार्थ राजसी सुख वैभव में पलने लगा। समय पाकर वह अद्वितीय बुद्धिशाली और बलशाली हुआ। महाराज ने इस बात के लिए कोई कसर नहीं उठा रखी कि उसका जीवन समस्त सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण हो। राजकुमार के लिए तीनों ऋतुओं के अनुकूल तीन महल बना दिये गये और उन्हें भोग-विलास की साधन-सामग्रियों से परिपूर्ण कर दिया गया, ताकि राजकुमार निरंतर आमोद-प्रमोद में ही डूबा रहे। स्वाभाविक वात्सल्य-स्नेहवश महाराज की उत्कट अभिलाषा थी कि उनका पुत्र जीवनपर्यंत राजसी सुख-संपदा का उपभोग करे और कहीं विरक्त होकर सम्यक संबुद्ध न बन जाय।

उसने इस बात का पूरा प्रबंध करवा दिया कि वैराग्य के सारे उपकरण राजकुमार से दूर रखे जायँ। सभी सेवकों और साथियों को यह निर्देश दे दिया गया कि वे राजकुमार के सम्मुख जरा, व्याधि और मृत्यु की चर्चा तक न करें, बल्कि उसे इस भ्रम में रखें कि संसार में कहीं दु:ख है ही नहीं। इस संबंध में इतनी सावधानी रखी गई कि जिस किसी सेवक में जरा और व्याधि के किंचित भी लक्षण दीख पड़ने लगते, उसे राजकुमार की सेवा से तुरंत निवृत्त कर दिया जाता। दूसरी ओर नाचगान और रागरंग का ऐसा वातावरण बना कर रखा गया कि कुमार निरंतर विषय-वासना में ही निमग्न रहे।

महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग)

परंतु जैसे-जैसे समय बीतता गया, इस एकरसीय विलासिता से कुमार का मन ऊबने लगा; रागरंग फीके पड़ने लगे। अपने असंख्य पूर्व जन्मों में किये गये कुशल कर्मों द्वारा बुद्धत्व प्राप्ति के हेतु जिन पारमिताओं को परिपूर्ण किया था, वे अब स्वत: जागृत होने लगीं। कभी-कभी जब कामास्रव क्षीण हो जाते तो कुमार का चित्त विशुद्धि और प्रश्रब्धि प्राप्त कर समाधि की वैसी ही उन्नत अवस्था में पहुँच जाता, जैसी कि उसने शैशवावस्था में अनायास प्राप्त की थी जबकि राजगुरु देवल के सिर पर उसके चरण लग गये थे। धीरे-धीरे कुमार के मन में अंतर्द्वंद्व आरंभ हो गया। विषय-वासना के बंधनों से मुक्ति पाने के लिए मन उद्विग्न हो उठा। उसे यह जानने की तीव्र इच्छा हुई कि राजमहल की चहारदीवारी के बाहर क्या है, जहां कि उसे जाने नहीं दिया जा रहा। वह चाहने लगा कि बाहर प्रकृति को अपने सत्य स्वरूप सें देखे, न कि महलों के भीतर कृत्रिम रूप को। उसने आग्रह किया कि वह महलों के बाहर राजकीय उपवन की सैर करने जाय। अनिच्छा होते हुए भी महाराज शुद्धोदन को स्वीकृति देनी पड़ी। परंतु उसने इस बात का प्रबंध करा दिया कि सारे रास्ते कुमार को कोई अप्रिय दर्शन न हो। लेकिन फिर भी, राजमहल से पहली बार बाहर निकलने पर उसने कमर झुके हुए एक बूढ़े को देखा, दूसरी बार मरणांतक पीड़ा से व्याकुल एक रोगी को देखा, तीसरी बार एक मुर्दे को और चौथी बार एक विरक्त संन्यासी को देखा।

इन चारों दृश्यों ने कुमार के मन को गंभीर चिंतन में निमग्न कर दिया। उसकी मनोस्थिति में विशिष्ट परिवर्तन आया। मन के सारे विकार दूर हो गये और वह इस प्रकार विरज विमल होकर संस्कार लोक में पूर्व संचित अनंत पारमी शक्तियों से संयुक्त हो गया। अब उसका मन और भी निर्बंध, प्रशांत, प्रशुद्ध और प्रबल हो गया। यह सब उसी रात को हुआ जबकि पत्नी यशोधरा ने भवबंधन की नई बेड़ी स्वरूप, एक पुत्र को जन्म दिया। परंतु अब कोई बंधन सिद्धार्थ को बांध नहीं सकता था, कोई बाधा उसे रोक नहीं सकती थी, कोई दुविधा उसके मन को विचलित नहीं कर सकती थी। उसने दृढ़ निश्चय किया कि जन्म, जरा, दु:ख और मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए सत्य मार्ग ढूंढना ही होगा और इस दृढ़ संकल्प को जन्म-जन्मांतरों से संचित अधिष्ठान पारमी का अपूर्व बल प्राप्त हुआ। आधी रात बीतते-बीतते राजकुमार ने घर से बेघर होने का अंतिम निर्णय कर लिया। उसने सेवक छन्न को आदेश दिया कि प्रिय अश्व कंथक को शीघ्र तैयार कर दे। प्रिय पत्नी यशोधरा और नवजात पुत्र राहुल पर उसने विदाई की दृष्टि डाली और पारिवारिक जीवन से सदा के लिए विमुख होकर महाभिनिष्क्रमण (गृहत्याग) कर दिया। राजधानी छोड़ कर उसने अनोमा नदी पार की और यह दृढ़ निश्चय किया कि अभीष्ट सिद्धि प्राप्त किये बिना वापस नहीं लौटूंगा।

—सयाजी ऊ बा खिन जर्नल से साभार

... (*क्रमशः अगले अंक में*)

धम्मसुगंध विपश्यना केंद्र, सांगली, महाराष्ट्र में निर्माणकार्य का प्रारंभ

महाराष्ट्र के सांगली जिले में मिरज रेलवे स्टेशन से २० कि. मी. दूर धम्मसुगंध विपश्यना केंद्र विकसित किया जा रहा है। 20 जनवरी को शिलान्यास संपन्न हुआ।

इसके प्रथम चरण में १०० साधकों के लिए धम्महॉल, मिनीहॉल, आचार्य निवास तथा अन्य निवासादि का निर्माण होगा। तत्पश्चात सुविधानुसार विस्तार होगा।

इस पुण्यार्जक कार्य में भाग लेने के इच्छुक कृपया संपर्क करें– 1) श्री. शीतल मुले, ९४२२४१०४३६, या 2) श्री सुनील चौगुले ९४०३८४१९४३। अन्य बैंक संबंधी जानकारी www.sugandha.dhamma.org से प्राप्त की जा सकती है। ईमेल संपर्क: sanglivipassana@gmail.com

मंगल मृत्यु

वरिष्ठ सहायक आचार्य श्री शिवजीभाई कुंवरजी विकमसे ने वयोवृद्ध अवस्था में 15 फरवरी 2018 को शांतिपूर्वक शरीर त्याग किया। 1980 में विपश्यना का पहला शिविर करने के बाद वे तन, मन, धन से इसी के होकर रह गये। 1997 में सहायक आचार्य नियुक्त हुए और 2001 में वरिष्ठ स.आ. बन कर अनेकों के मंगल में सहायक हुए। उनके कारण उनका पूरा परिवार ही नहीं, बल्कि अनेक मित्र, संगी-साथी, रिस्तेदार सब विपश्यना से जुड़ते चले गये। परिवार के सभी सदस्य ट्रस्टी से लेकर धर्मसेवा के हर क्षेत्र में हाथ बँटाते रहते हैं। ऐसे पुण्यशाली व्यक्ति की शील-सुगंध और सेवाएं निश्चित रूप से लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बनेंगी। दिवंगत के प्रति धम्म परिवार की समस्त मंगल कामनाएं।

Registered No. NSK/RNP-235/2018-2020

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

1. श्री अरुण अंजारकर, धम्मालय (कोल्हापुर) के केंद्र-आचार्य की सहायता
2. श्री प्रकाश लड्ढा, धम्म नासिका (नाशिक) की केंद्र-आचार्य के रूप में सेवा,

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

1. श्री रामनाथ शेनॉय, मुंबई

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

1. श्रीमती राज्यलक्ष्मी वत्रापु, हैदराबाद
2. श्री अमित साहनी, नोएडा, उत्तर प्रदेश
3. श्रीमती अंजली धांडा, गुड़गांव, हरियाणा
4. श्री रामनिवास, दिल्ली
5. श्रीमती वीना बंडारी, हैदराबाद
6. सुश्री स्नेहल मदुस्कर, मुंबई
7. श्रीमती संध्या कोठाडिया, मुंबई
8. श्री दीपू किझाक्केवीट्टील, इगतपुरी

बाल-शिविर शिक्षक

1. श्रीमती नीलकांति सरिथा, आर आर जिला-तेलंगाना
2. श्री बाबूराम यादव, श्रावस्ती, उत्तर प्रदेश
3. श्री गिरधारी यादव, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश
4. श्री सचिन कुमार, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
5. कु. किरन, बस्ती, उत्तर प्रदेश
6. कु. रेनू गौतम, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

धम्मालय-2 आवास का निर्माण कार्य

पगोडा परिसर में 'एक दिवसीय' महाशिविरों में सुदूर से आने वाले साधकों तथा धर्मसेवकों के लिए रात्रि-विश्राम की निःशुल्क सुविधा हेतु "धम्मालय-2" आवास का निर्माण कार्य होगा। जो भी साधक-साधिका इस पुण्यकार्य में भागीदार होना चाहें, वे कृपया संपर्क करें:- 1. Mr. Derik Pegado, 9921227057. or 2.Sri Bipin Mehta, Mo. 9920052156, A/c. Office: 022-62427512/ 62427510; Email: audits@globalpagoda.org; Bank Details of VRI - 'Vipassana Research Institute', Axis Bank Ltd., Sonimur Apartments, Timber Estate, Malad (W), Mumbai - 400064, Branch - Malad (W). Bank A/c No. - 911010004132846; IFSC No.- UTIB0000062; Swift code: AXISINBB062.

पगोडा पर रात भर रोशनी का महत्त्व

पूज्य गुरुजी बार-बार कहा करते थे कि किसी **धातु-गब्भ** पगोडा पर रात भर रोशनी रहने का अपना विशेष महत्त्व है। इससे सारा वातावरण दीर्घकाल तक धर्म एवं मैत्री-तरंगों से भरपूर रहता है। तदर्थ सगे-संबंधियों की याद में ग्लोबल पगोडा पर रोशनी-दान के लिए प्रति रात्रि रु. 5000/- निर्धारित किये गये हैं। संपर्क- उपरोक्त पते पर...

विपश्यना विशोधन विन्यास, ग्लोबल पगोडा में पालि-अंग्रेजी 8 सप्ताह का आवासीय पाठ्यक्रम वर्ष 2018

अवधि: 14 जुलाई से 11 सितंबर तक, **उपरोक्त कार्यक्रम की योग्यता जानने के लिए इस शृंखला का अनुसरण करे-** http://www.vridhamma.org/Theory-And-Practice-Courses. **अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें-** श्रीमती बलजीत लांबा-9833518979, श्रीमती अल्का वेंगुर्लेकर- 9820583440, श्रीमती अर्चना देशपांडे- 9869007040, VRI Office : 022-62427560 (9:30AM to 5:30PM), **Email:** Mumbai@vridhamma.org

ग्लोबल पगोडा में सन 2018 के एक-दिवसीय महाशिविर

रविवार 29 अप्रेल- **बुद्धपूर्णिमा, रविवार** 29 जुलाई- **आषाढ़ी पूर्णिमा, रविवार** 30 सितंबर- **शरद पूर्णिमा** एवं **पूज्य गुरुजी की पुण्य-तिथि** *(29 सितंबर)* के उपलक्ष्य में **एक दिवसीय** महाशिविर होंगे। **समय-** प्रातः 11 बजे से अपराह्न 4 बजे तक। 3 से 4 बजे के प्रवचन में बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। बुकिंग के लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें। कृपया बिना बुकिंग कराये न आयें और **सम्मग्गानं तपो सुखो-** सामूहिक तप-सुख का लाभ उठाएं। **संपर्क:** 022-28451170, 022-62427544-Extn. no. 9, 82918 94644. (फोन बुकिंग- प्रतिदिन 11 से 5 बजे तक) Online Regn: www.oneday.globalpagoda.org

दोहे धर्म के

सम्मुख दीपङ्कर खड़े, जो सम्यक संबुद्ध।
पाये विमल विपश्यना, बने मुक्त हो शुद्ध॥

एक अकेला मैं तरूं, यह तो अनुचित स्वार्थ।
औरों को तारे बिना, सधे नहीं परमार्थ॥

सहज प्राप्त है मुक्ति पर, कर दूं इसका त्याग।
और पारमी जोड़ कर, बनूं बुद्ध बड़भाग॥

जन-जन के कल्याण हित, कैसे करुणावान।
किया पारमी पूर्ण सब, बने बुद्ध भगवान॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा0) लिमिटेड
8, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धर्म रा

जीवन मँह आंधी चलै, चलै तेज तूफान।
हिमगिरि सो अविचळ रवै, याहि संत पहचाण॥

प्रबल पराक्रम ही करै, संत काय परजंत।
धरम पंथ पर जूझतो, करै दुखां रो अंत॥

संत सुधा बांटत रवै, पीवै बिरलो कोय।
पातर फूट्यो बह गयी, सुधा ग्रहण किम होय?

दुरजन रा कटु वचन सुण, संत न द्वेस जगाय।
सतत जगै सद्भावना, करुणा हियै समाय॥

मोरया ट्रेडिंग कंपनी
सर्वो स्टॉकिस्ट-इंडियन ऑईल, 74, सुरेशदादा जैन शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, एन.एच.6,
अजिंठा चौक, जलगांव - 425 003, फोन. नं. 0257-2210372, 2212877
मोबा.09423187301, Email: morolium_jal@yahoo.co.in
की मंगल कामनाओं सहित

"विपश्यना विशोधन विन्यास" के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी- 422 403, दूरभाष :(02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अपोलो प्रिंटिंग प्रेस, 259, सीकाफ लिमिटेड, 69 एम. आय. डी. सी, सातपुर, नाशिक-422 007. बुद्धवर्ष 2561, फाल्गुन पूर्णिमा, 1 मार्च, 2018

वार्षिक शुल्क रु. 30/-, US $ 10, आजीवन शुल्क रु. 500/-, US $ 100. "विपश्यना" रजि. नं. 19156/71. Postal Regi. No. NSK/RNP-235/2018-2020

Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

DATE OF PRINTING: 20 February, 2018, DATE OF PUBLICATION: 1 March, 2018

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 244144,
244440. फैक्स : (02553) 244176
Email: vri_admin@dhamma.net.in;
course booking: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org